छत्तीसगढ़ मे केंवांच की 25 से भी अधिक नयी प्रजातियाँ

* 550 से अधिक पारंपरिक चिकित्सक करते हैं केवांच का प्रयोग
* पार्किन्सन्स जैसे लाइलाज रोग में उपयोगी

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे ं जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य के वनों मे केवांच (क्रौंच) की 25 से अधिक नयी प्रजातियाँ उपलब्ध है। ये सभी प्रजातियाँ संदर्भ साहित्यों में म्यूकुना प्युरियेन्स के नाम से वर्णित है। पर इन सभी प्रजातियों मे न केवल वानस्पतिक भिन्नता है बल्कि ये प्रजातियाँ औषधिय गुणों के दृष्टिकोण से भी भिन्न है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे एथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि आमतौर पर काले बीजों वाले केवांच को औषधि गुणों से परिपूर्ण माना जाता है। पर राज्य मे काले, भूरे और सफेद बीजों वाली प्रजातियों की प्रचुरता है। इन तीनों रंगों से बने विभिन्न रंगों वाले बीज युक्त प्रजातियाँ भी उपलब्ध है। राज्य के निवासी केवांच को खुजली पैदा करने वाले और खुजली रहित प्रजातियों में बांटते है। खुजली रहित प्रजातियों की फल्लियों का प्रयोग साग के रुप मे ं होता है। राज्य के पारंपरिक चिकित्सक केवांच की 25 प्रजातियों को अलग-अलग पहचानते है और उन्हें उपयोग मे लाते है। यद्यपि राष्ट्रीय बाजार मे केवांच के बीजों की मांग है पर पारंपरिक चिकित्सक इस के सभी भागों का प्रयोग आंतरिक और बाहरी तौर पर विभिन्न रोगों की चिकित्सा मे करते है। राज्य के पारंपरिक चिकित्सकों की केवांच के उपयोग मे दक्षता विश्व के विभिन्न भागों से पार्किंसन्स नामक जटिल रोग से ग्रस्त लोगों को छत्तीसगढ़ मे खीच लाती है। पारंपरिक चिकित्सक केवल केवांच के उपयोग से ही इस रोग की चिकित्सा करते है। केवांच की नई 25 प्रजातियों का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सक सामान्य दुर्बलता से लेकर कैंसर जैसे जटिल रोगों की चिकित्सा मे करते है। इन 25 प्रजातियों में से 20 प्रजातियाँ खुजली पैदा करती है। प्राकृतिक परिस्थितियों में सभी प्रजातियों के आस-पास कुछ ऐसी वनौषधियाँ उगती हैं जो कि इस खुजली की चिकित्सा मे अहम भूमिका निभाती है। केवांच की नई प्रजातियो पर आश्रित कीटों और आस-पास की मिट्टी का प्रयोग भी औषधि के रुप में पारंपरिक चिकित्सक करते है। केवांच के सफेद बीजों वाली प्रजाति की व्यवसायिक खेती राज्य में हो रही है। पर कम कीमत मिलने के कारण किसान चिन्तित है। पंकज अवधिया का सुझाव है कि केवांच की 25 नई जातियो पर अनुसंधान के माध्यम से ऐसी प्रजातियों की व्यवसायिक खेती को बढ़ावा दिया जा सकता है जिसकी बाजार में मांग है और जिनका संरक्षण आवश्यक है। केवांच के व्यापक उपयोगों के विषय में भी आम लोगों को बताने की आवश्यकता है। राज्य के वरिष्ठ किसान केवांच के पौधों के मिट्टी पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव के विषय मे ं जानते है। इसलिये जैविक खेती विशेषकर औषधिय फसलों की खेती कर रहे किसान केवांच के आस-पास की मिट्टी को गोबर की खाद मे मिलाकर खेत की तैयारी के समय प्रयोग करते है। विश्व के बहुत से भागों मे केवांच का प्रयोग हरी खाद की फसल के रुप मे होता है। छत्तीसगढ़ मे इस प्रयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। पंकज अवधिया ने आगे बताया कि राज्य के पारंपरिक चिकित्सक केवांच के जलीय सत्वों का प्रयोग विभिन्न वृक्षों को औषधी गुणों से परिपूर्ण करने में करते है। पंकज अवधिया ने इस अनूठे पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण कर लिया है। उनका मानना है कि केवांच की नई प्रजातियों को पहचान कर केवांच पर केन्द्रित जीन बैंक की स्थापना की आवश्यकता है ताकि इन प्रजातियों का संरक्षण और संवर्धन हो सके। राज्य के 550 से भी अधिक विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों के ज्ञान को वैज्ञानिक मान्यता प्रदान करने की भी आवश्यकता है।